जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

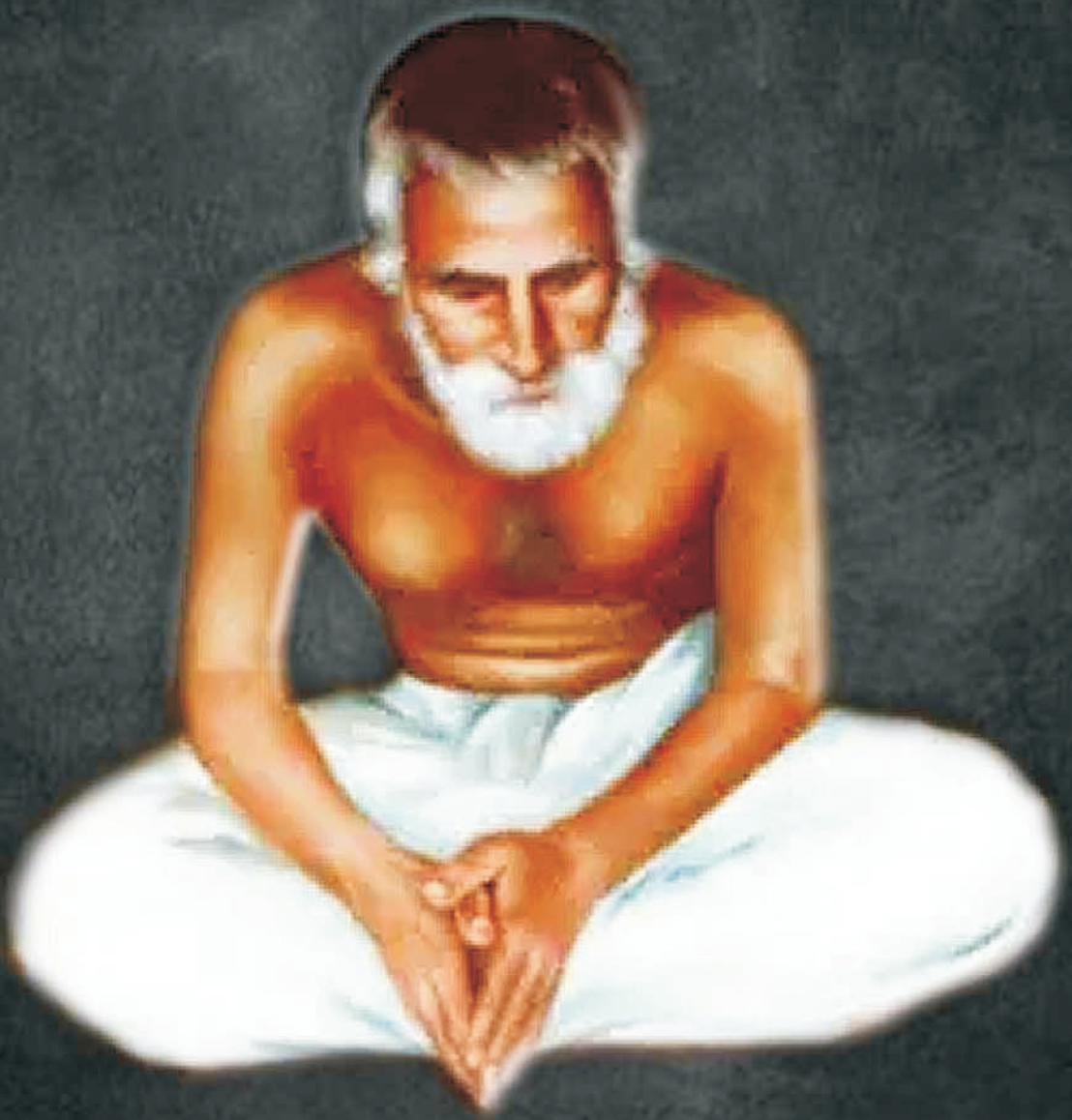

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

लोक-शिक्षक

श्रीगुरु-गौरोगौ जयतः

एक दिन बाबाजी महाराज अपने श्रीचरण कमलों को विशेष रुप से वस्त्रों से लपेट कर अपने समस्त शरीर को ढककर बैठे हैं और कह रहे हैं– 'लोग अन्य मतलब से मेरे पाँव की धूलि लेने आते हैं; मैं कहता हूँ– मैं तो वैष्णव नहीं हूँ, जो पाँव की धूलि देने के लिए, चरणामृत देने के लिए वैष्णव बनकर पाँव बढ़ाकर

बैठे हैं, उन सभी वैष्णवों के मुहल्लों में जाते ही तो वे बहुतों से पाँव की धूलि प्राप्त कर सकते हैं?'

इसके थोड़ी देर बाद ही 'अ***' भट्टाचार्य नामक व्यक्ति अपने एक साथी के साथ वृन्दावनादि दर्शन करके बाबाजी महाराज के पास आकर कहने लगे– 'आप मेरे गुरु हैं, मुझपर कृपा कीजिए।' बाबाजी महाराज जी ने कहा, 'मेरे पास रसगुल्ला, सन्देश, लुचि, पूरी, रुपया-पैसा, मीठे वचन कुछ भी नहीं है, मैं

किस चीज़ से कृपा करूँ? जो सब गुरु, शिष्य को पूरी, सन्देश खिला पाते हैं और उसको 'बड़ा भक्त' कहकर प्रशंसा कर पाते हैं, वे ही आजकल गुरु बनने के और कृपा करने के अधिकारी हैं। आजकल पण्डितों ने 'अनुकूलता' के नाम से– 'पैसा, सुन्दरी स्त्री, मीठी बातें– यह सब समझ लिया है।' यह सुनकर उक्त भट्टाचार्य महोदय कहने लगे– 'हमारे मन में तो बहुत प्रकार की भ्रान्त धारणाएँ हैं, फिर भी आप जो कहेंगे, वही

करूँगा।' तब बाबाजी महाराज जी ने कहा– 'मैं तो चावल भिगोकर खाना और छप्पड़ के नीचे रहने को ही एकमात्र भजन के अनुकूल देखता हूँ। इस प्रकार का भोजन खाना चाहिए जिसे कुत्ता भी न खाए, इस प्रकार के वस्त्र पहनने होंगे कि चोर भी लेने में घृणा करे; और प्रतिक्षण साधु-संग में रहकर हरिनाम करना होगा। लेकिन बन्दर के समान वैरागी होने से भजन चूल्हे में चला जाएगा। बन्दर चुपचाप बैठा रहता है,

लेकिन सुयोग मिलते ही दूसरों की वस्तु ले लेता है। बन्दर के समान मर्कट वैराग्य करके कदापि भजन-निष्ठा प्राप्त नहीं की जा सकती।

श्रीलगुरुदेव